Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजस्थान के कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालिका विद्यालय व सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. दीपक पंचौली* सोनाली त्यागी**

* शोध पर्यवेक्षक, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत
** शोधार्थी, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान के कोटा क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर बालिका विद्यालय और सह शिक्षा विद्यालय में पढ़ने वाली बालिकाओं के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध में पाया गया कि सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं का आत्मविश्वास तुलनात्मक रूप से अधिक था, जबकि शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में भी सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं ने बेहतर प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर, यह अध्ययन बताता है कि सह शिक्षा से बालिकाओं के आत्मविश्वास और शैक्षिक प्रदर्शन दोनों में सुधार होता है, जो उनके संपूर्ण विकास के लिए सहायक है।

प्रस्तावना – शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जों बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा के द्वारा मानव न केवल आर्थिक विकास करता है बल्कि पूर्णता को प्राप्त करता है। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वह है जो हमें अज्ञान से मुक्ति दिलाती है। इसके विपरीत अशिक्षा न केवल अन्धकार ही फैलाती है अपितु ऐसा विशाल जन समूह भी तैयार करती है जो दमन तथा शोषण को अपना भाग्य मान लेते हैं। शिक्षा ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक मात्र साधन है जो बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उसे पूर्ण विकसित करती है तथा मनुष्य अपने रहन–सहन में परिवर्तन तथा परिमार्जन करता है। शिक्षा के द्वारा ही सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति सम्भव है। शिक्षा मनुष्य के सम्यक विकास के लिए आवश्यक मानी गयी है, जो व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक दृष्टि से समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने में सहायता करती है जिससे व्यक्ति किसी समाज में अपने को पूर्णत: स्थापित करता है जिसके परिणामस्वरूप उस समाज का स्तर उतना ही ऊँचा होता है क्योंकि जिस समाज में जितने सभ्य एवं शिक्षित व्यक्ति होते हैं उस समाज का स्तर उतना ही ऊँचा होता है।

आत्मविश्वास वस्तुत: एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है तथा इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सहजता से सफलता मिलती है। यह आत्म रक्षा के लिए ब्रह्मास्त्र का कार्य करता हैं जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओतप्रोत होते हैं उन्हें अपने भविष्य के लिए किसी प्रकार की चिन्ता परेशान नहीं करती। आत्मविश्वास रहित व्यक्ति जिन सन्देहों व शंकाओं से दबे रहते है, एक आत्मविश्वासी व्यक्ति उनसे सदैव मुक्त रहता है।

आत्मविश्वास वह अदभुत शक्ति है जिसके बल पर नितान्त एकाकी व्यक्ति हजारों विपत्तियों एवं शत्रुओं का सामना कर सकता है। निर्धन व्यक्तियों की सबसे बड़ी पूंजी और सबसे बड़ा सम्बल आत्मविश्वास ही है इस संसार में जितने भी सफल व्यक्ति हुए है या हो रहे है उन सबका मूल कारण उनके अन्दर प्रचुर मात्रा में आत्मविश्वास का होना ही है।

आत्मविश्वास हमारी आत्मा का सम्बल है जो हमें कुछ करने या कुछ पाने की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देता है। कामयाबी और आत्मविश्वास का गहरा संबंध है या कहें कि वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। छोटे से छोटे कार्य में कामयाबी के लिए हमारे अन्दर आत्मविश्वास का होना बहुत आवश्यक है इसी तरह अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए हमें सफलता प्राप्त करना भी आवश्यक है।

स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि, 'जिस मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं है वह शक्तिशाली होकर भी डरपोक है, और विद्वान होकर भी मूर्ख है।' अर्थात् वह व्यक्ति जो सर्वगुण सम्पन्न और योग्य होता है, किन्तु उसमें आत्मविश्वास का अभाव है तो सफलता उससे सदैव दूर ही रहती है। इसी आत्मविश्वास के बल पर मानव निरन्तर प्रगति की राह पर अग्रसर रहते हुए आज मिसाइल युग में प्रवेश कर चुका है।'

शिक्षा के क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है इस ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता व्यक्ति ने प्राप्त की है, इसका पता उस ज्ञान तथा कौशल के उपलब्धि परीक्षण से चलता है। शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के व्यवहार में कुछ पूर्व निर्धारित संशोधन करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। छात्रों द्वारा उन उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है, यही उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्तर को बताता है। विद्यालय में विभिन्न कक्षाओं में विद्यार्थी साल भर विभिन्न विषयों

का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का ज्ञान तथा ज्ञानार्जन करने की सीमा या प्रगति एक समान नहीं होती है। किसी कक्षा विशेष के विद्यार्थियों ने कितनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है। इसकी जाँच करना आवश्यक होता है इसकी जाँच जिस परीक्षण द्वारा की जाती है उसे ही उपलब्धि परीक्षा कहते हैं। विद्यार्थियों का अंक पत्र भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करता है, अत: कहा जा सकता है कि उपलब्धि परीक्षायें वे परीक्षायें हैं जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार है–

प्रेसी, रॉबिन्सन व हॉरक्स के अनुसार 'उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माप करने के लिए किया जाता है।'

क्रायर्स (2005) के अनुसार 'अकादमिक उपलब्धि का कार्य विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं कौशल को अर्जित करने के लक्ष्य की विद्यार्थी द्वारा प्राप्ति है ज्ञान एवं कौशल के उद्देश्य सामाजिक रुप से आयु, पुर्व अधिगम स्तर एवं विद्यार्थियों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाता है'।

समस्या का औचित्य – आवश्यकता की संतुष्टि जब किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो पाती है तब एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि आवश्यकता की संतुष्टि के साधन या मार्ग में 'बाधा' ही समस्या है। जैसे ही समस्या समाधान के साधन खोज लिए जाते है, आवश्यकता की संतुष्टि हो जाती है तथा समस्या का अंत हो जाता है। इस प्रकार आवश्यकता जितनी प्रबल होगी एवं अवरोध जितना तीव्र होगा, समस्या भी उतनी ही गम्भीर होगी।

करलिंगर, 'समस्या एक प्रश्नवाचक वाक्य अथवा विवरण है जिसमें दो या दो से अधिक चल राशियों में सहसम्बन्ध ज्ञात किया जाता है।'

शिक्षा प्राप्त करना सभी बालक बालिकाओं का मौलिक अधिकार है, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, समुदाय, क्षेत्र, लिंग या वर्ग के हो। इस हेतु विद्यालय व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। इन संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाली छात्राओं के विज्ञान एवं समायोजन में अन्तर पाया जाता है। बालिका विद्यालयों व सहशिक्षा विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के बीच पाये जाने वाले इस अन्तर को शिक्षण संस्थाऐं शिक्षक व अभिभावक भी नहीं जान पाते। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राऐं किशोरावस्था से गुजर रही होती है एवं इस काल में सीखा गया ज्ञान ही उनके भविष्य की दिशा निर्धारित करता है।

शोधार्थी के मस्तिष्क में यह सवाल आया कि क्या विद्यालय के प्रकार व वातावरण का बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं तथा इन छात्राओं का आत्मविश्वास एवं उपलब्धि किस प्रकार की है ? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने हेतु शोधार्थी ने 'उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालिका विद्यालय व सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' समस्या पर शोध करने का मानस बनाया।

शोध उद्देश्य :

1. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ:

1. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

विद्यालय – शाब्दिक दृष्टि से 'विद्यालय' शब्द दो शब्दों 'विद्या' तथा 'आलय' से मिलकर बना है। 'विधा' शब्द का अर्थ है ज्ञान तथा 'आलय' का अर्थ है मंदिर है। जहाँ ज्ञान की उपासना की जाती है।

बालिका विद्यालय – बालिका विद्यालय में सिर्फ छात्राएँ ही अध्ययन करती है तथा इन छात्राओं में सभी वर्गों (उच्च निम्न) से संबंध रखने वाली बालिकाएँ होती है।

सहशिक्षा विद्यालय – सह शिक्षा दो शब्दों का संयोग है सामूहिक शिक्षा अर्थात् 'ऐसे विद्यालय जिनमें छात्र एवं छात्राएँ साथ–साथ शिक्षा ग्रहण करते है। सहशिक्षा विद्यालय कहलाए जाते है।'

आत्मविश्वास – आत्मविश्वास वस्तुत: एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है तथा इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सहजता से सफलता मिलती है।

शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अर्जित निपुणता एवं ज्ञान से है जिसके आधार पर उनकी विचारों में उत्तरोत्तर वृद्धि दृष्टिगोचर होते है। **चैपलिन (1975) के अनुसार** 'शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य शैक्षिक कार्यों में शिक्षकों द्वारा मानकीकृत परीक्षणों द्वारा या इन दोनों के संयोग द्वारा मूल्यांकित उपलब्धि या प्रवीणता के विशिष्ट स्तर से है'।

अध्ययन का परिसीमन :

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बालिकाओं को ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान की कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं तक ही सीमित है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

त्रिपाठी गौरव (2021), ने हायर सैकेण्डरी के अधिगमकर्ताओं ने आत्मविश्वास पर कार्य किया। कार्य का मुख्य उद्देश्य गवर्नमेन्ट एवं प्राइवेट स्कूलों के हायर सेकेण्डरी स्टेज के अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास में अंतर का आंकलन निश्चित किया गया। सैंपल के तौर पर जयपुर जिले के गवर्नमेन्ट व प्राइवेट स्कूलों के 90–90 अधिगमकर्ताओं को चुना गया। डेटा का संकलन डॉ. ए.पांडे की आत्मविश्वास से किया गया। निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गवर्नमेन्ट एवं प्राइवेट स्कूलों के सेकेण्डरी स्टेज के अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास के स्तर में प्राप्त अंतर में सार्थकता नहीं है।

ओमिदुल्लाह (2020) ने विश्वविद्यालय स्तर के अधिगमकर्ताओं ने आत्मविश्वास तथा अधिगम प्रक्रिया पर कार्य किया। कार्य का मुख्य उद्देश्य

कंधार विश्वविद्यालय के अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास के स्तर का आंकलन करना निश्चित किया। संकलित डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त हुआ कि कंधार विश्वविद्यालय के अधिकांश अधिगमकर्ताओं का आत्मविश्वास उच्च स्तर का है। कुछ ही अधिगमकर्ताओं का आत्मविश्वास निम्न स्तर का प्राप्त हुआ।

भगवानदास,के. ज्योति (2019) ने सेकेण्डरी स्टेज के अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास पर कार्य किया। कार्य का प्रमुख उद्देश्य अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास में लिंग के आधार पर फर्क देखना निश्चित किया गया। सैंपल के तौर पर कक्षा 10 के 200 अधिगमकर्ताओं को चुना गया। डेटा का संकलन सेल्फ कांफीडेंस टेस्ट द्वारा किया गया। टी-टेस्ट की गणना के पश्चात निष्कर्षत: प्राप्त हुआ कि अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास में लिंग के आधार पर प्राप्त अंतर में सार्थकता नहीं है।

तिवारी प्रदीप कुमार एवं चौधरी नीरु (2021) ने हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले लगभग 200 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग एवं क्षेत्र धर्म में वर्गीकृत किया गया है। जिसमें हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दू एवं मूस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

यादव, संतोष कुमार (2018) ने, 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन' विषय पर शोध किया। इसका उद्देश्य उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना था।

निष्कर्ष – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात् पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सिंह, प्रमिला (2017) ने, 'रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध विधि – अनुसंधान समस्या की प्रकृति तथा प्रस्तावित उद्देश्यों के स्वरूप को देखते हुये शोधार्थी द्वारा 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

शोध न्यादर्श – प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा राजस्थान के कोटा संभाग के (कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़) की माध्यमिक स्तर की 800 बालिकाओं का चयन किया जायेगा। जिनमें से 400 बालिका विद्यालय और 400 सहशिक्षा विद्यालय से चयन किया गया है।

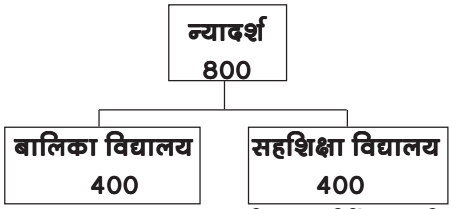

शोध में प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत शोध कार्य में मानकीकृत उपकरण उपलब्ध होने के कारण आत्म विश्वास एवं समायोजन हेतु मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग गया है ।

(1) आत्मविश्वास प्रमापनी – बालिकाओं के आत्मविश्वास सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधार्थी ने **डॉ. रेखा गुप्ता** द्वारा निर्मित प्रमापनी का प्रयोग किया गया है ।

(2) शैक्षिक उपलब्धि – कक्षा 11वीं व 12वीं के वार्षिक परीक्षा प्राप्तांक का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी – प्रस्तुत शोध में मूल आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. टी-टेस्ट

व्याख्या एवं विश्लेषण – परिकल्पना 1 कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

व्याख्या एवं विश्लेषण :

1. सारणी 1 में कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमश: 22.65 व 19.95 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमश: 7.915 व 4.318 प्राप्त हुआ है।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास के प्रदत्तों से प्राप्त मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की सांख्यिकी गणना द्वारा टी मूल्य 7.10 प्राप्त हुआ है।
3. प्राप्त टी मूल्य 7.10, स्वतंत्रता अंश df = 798 के सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका टी मूल्य 1.962 से अधिक प्राप्त हुआ है। अत: परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – अत: परिकल्पना कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख 1: कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास मापनी आरेख द्वारा प्रदर्शित

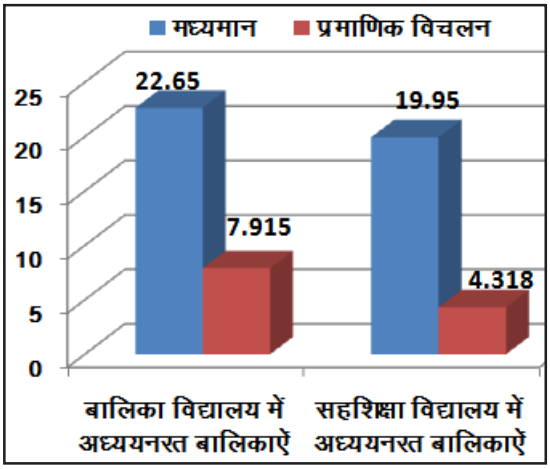

परिकल्पना 2 कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2 (अगले पृष्ठ पर देखे)

व्याख्या एवं विश्लेषण :

1. सारणी 2 में कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमश: 77.92 व 79.60 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमश: 7.968 व 6.671 प्राप्त हुआ है।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों से प्राप्त मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की सांख्यिकी गणना द्वारा टी मूल्य 3.224 प्राप्त हुआ है।
3. प्राप्त टी मूल्य 3.224, स्वतंत्रता अंश df = 798 के सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका टी मूल्य 1.962 से अधिक प्राप्त हुआ है। अत: परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष – अत: परिकल्पना कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख 2: कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मापनी आरेख द्वारा प्रदर्शित

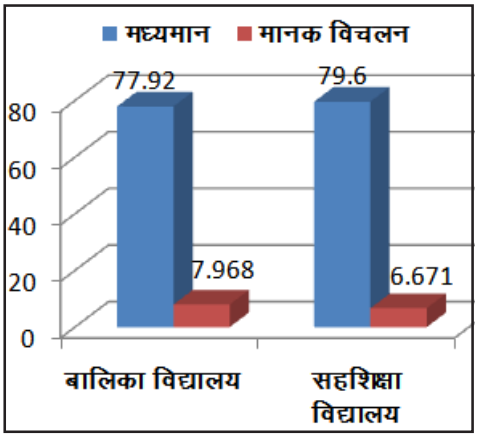

शोध अध्ययन के निष्कर्ष :

1. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है।

उपसंहार – प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालिका विद्यालय एवं सह-शिक्षा विद्यालय दोनों ही अपने-अपने स्तर पर बालिकाओं के विकास में योगदान देते हैं, किन्तु सह-शिक्षा के वातावरण में बालिकाओं के आत्मविश्वास में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि देखी गई।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि उपयुक्त शैक्षिक वातावरण, प्रोत्साहन एवं अवसर मिलने पर बालिकाएँ शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं। अत: आवश्यक है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण बनाया जाए जो बालिकाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाए और उनकी शैक्षिक उपलब्धि को सुदृढ़ करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. डॉ. पारीक, मथुरेश्वर एवं प्रो. शर्मा, रजनी (2007), उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
2. डॉ. अरोड़ा, रीता एवं डॉ. पारीक, मथुरेश्वर (2005), उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन जयपुर।
3. डॉ. अरोड़ा, रीता एवं प्रो. मारवाह, सुदेश (2006),शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, शिक्षा प्रकाशन जयपुर।

पत्र-पत्रिकाएँ:

1. एल्फ्रेड एल्डर, मानविकी शब्दकोष, मनोविज्ञान खण्ड, राजकमल प्रकाशन।
2. बुच.एम.बी. (1989), भारतीय आधुनिक शिक्षा।
3. भार्गव ऊषा (1987), किशोर मनोविज्ञान, राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ।

Websites:-

1. www.indianresearchjournals.com
2. www.shodhganga.com

सारणी 1: कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास मापनी के प्रदत्तों का सांख्यिकीय परीक्षण

चर	क्षेत्र	वर्ग	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलनSD	टी-मूल्य t	सार्थकता 0.05
आत्मविश्वास	कोटा संभाग	बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाऐं	400	22.65	7.915	7.10	अस्वीकृत
		सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाऐं	400	19.95	4.318		

$df = N_1 + N_2 - 2$
$df = 400 + 400 - 2 = 798$
df = 798 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.962

सारणी 2: कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि मापनी के प्रदत्तों का सांख्यिकीय परीक्षण

चर	क्षेत्र	वर्ग	न्यादर्श N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन SD	टी-मूल्य t	सार्थकता0.05
शैक्षिक उपलब्धि	कोटा संभाग	बालिका विद्यालय	400	77.92	7.968	3.224	अस्वीकृत
		सहशिक्षा विद्यालय	400	79.60	6.671		

$df = N_1 + N_2 - 2$
$df = 400 + 400 - 2 = 798$
df = 798 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मूल्य = 1.962

****